# भारत में किन्नर समुदाय का ऐतिहासिक महत्व और भूमिका

**प्रिया यादव (Priya Yadav)**

M.A. Hindi

**Published in IJIRMPS (E-ISSN: 2349-7300), Volume 12, Issue 3, May- June 2024**

**License: Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License**

## परिचय

भारत में किन्नर समुदाय का ऐतिहासिक महत्व और भूमिका अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक, किन्नर समुदाय ने भारतीय समाज, संस्कृति और इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। इस समुदाय की विशिष्ट पहचान और सामाजिक स्थिति समय के साथ बदलती रही है, जिसमें धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक योगदान प्रमुख रूप से शामिल हैं। प्राचीन ग्रंथों और महाकाव्यों में किन्नर समुदाय का उल्लेख उनकी पारंपरिक और आध्यात्मिक भूमिकाओं को दर्शाता है। मुगल काल में राजनीतिक और सामाजिक पदों पर उनकी उपस्थिति से लेकर ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में उनके साथ हुए कानूनी भेदभाव तक, किन्नर समुदाय ने अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं। आधुनिक भारत में, सुप्रीम कोर्ट द्वारा 2014 में किन्नर समुदाय को तीसरे लिंग के रूप में मान्यता देने से उनकी कानूनी और सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है। विभिन्न सरकारी योजनाएं और सामाजिक आंदोलनों ने किन्नर समुदाय के अधिकारों और समानता के लिए नए अवसर प्रदान किए हैं। इस प्रकार, किन्नर समुदाय की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक भूमिका न केवल भारतीय समाज की विविधता और समृद्धि को दर्शाती है, बल्कि उनके संघर्ष और उपलब्धियों की भी गवाही देती है।

### 1.1 प्राचीन संदर्भ और धार्मिक महत्व

प्राचीन भारतीय समाज में किन्नर समुदाय का उल्लेख वेदों, पुराणों और महाकाव्यों में मिलता है, जो उनके धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को दर्शाता है। महाभारत जैसे महाकाव्यों में शिखंडी जैसे पात्रों के माध्यम से किन्नरों की उपस्थिति दिखाई देती है। धार्मिक अनुष्ठानों, विशेष रूप से जन्म और विवाह जैसे महत्वपूर्ण अवसरों पर किन्नरों की आशीर्वाद को शुभ और मंगलकारी माना जाता है। विभिन्न धार्मिक ग्रंथों में किन्नरों को अद्वितीय आध्यात्मिक शक्तियों और विशेष दर्जा प्राप्त है, जो उन्हें समाज में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाता है। इस प्रकार, किन्नर समुदाय का प्राचीन संदर्भ और धार्मिक महत्व भारतीय संस्कृति की गहरी परंपराओं और मान्यताओं में रचा-बसा है।

### 1.2 धार्मिक अनुष्ठानों और समारोहों में किन्नरों की महत्वपूर्ण भूमिका

धार्मिक अनुष्ठानों और समारोहों में किन्नरों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और विशिष्ट मानी जाती है। भारतीय समाज में, खासकर हिंदू धर्म में, किन्नरों को शुभ और मंगलकारी माना जाता है। जन्म, विवाह और गृह प्रवेश जैसे महत्वपूर्ण अवसरों पर किन्नरों की आशीर्वाद प्राप्त करने की परंपरा है, जिसे सौभाग्य और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। यह विश्वास है कि किन्नरों की आशीर्वाद नकारात्मक ऊर्जा को दूर करती है और जीवन में सुख-शांति लाती है। इस प्रकार, धार्मिक और सामाजिक समारोहों में उनकी उपस्थिति न केवल सांस्कृतिक परंपरा का हिस्सा है, बल्कि उनके सामाजिक महत्व और सम्मान को भी दर्शाती है।

### 1.3 वैदिक काल में किन्नरों की स्थिति

वेदों का काल एक प्राचीन काल था जब मानव समाज ने अपने आध्यात्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अस्तित्व को स्थापित किया था। इस समय के वेदों में "किन्नर" या "किन्नर" के बारे में विविध उल्लेख मिलते हैं, जो एक विशेष प्रकार के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अस्तित्व को प्रतिनिधित्त्व करते थे। वेदों के अनुसार, किन्नर देवताओं और मानवों के बीच स्थिति में एक प्रकार का संबंध बनाते थे। वे आध्यात्मिक और दिव्य अस्तित्व के धारक माने जाते थे, जिन्हें समानता और सम्मान के साथ देखा जाता था। किन्नरों की उपस्थिति को प्राकृतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संदर्भों में महत्व दिया गया था।

वेदों में किन्नरों को आकर्षक, सुंदर, और आध्यात्मिक शक्ति के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उन्हें गायक, नृत्यकार, और कलाकार के रूप में भी वर्णित किया गया है। उनका संगीत, नृत्य और कला में महारत थी, जिसे समाज ने महत्वपूर्ण माना। किन्नरों को वेदों में देवताओं के साथ समान उपास्य माना गया है। उन्हें देवताओं के द्वारा आत्मिक संवाद और गाथाएँ सुनाने का कार्य सौंपा गया था। उन्हें विभिन्न प्रकार के यज्ञों और ऋतुओं के अवसरों पर समाहित किया गया था। किन्नरों की स्थिति वेदों में उनके आध्यात्मिक और सामाजिक अहमियत को प्रकट करती है। उन्हें समाज में सम्मान और महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया था, जो उनके अनूठे

और दिव्य अस्तित्व को समझने में मदद करता था। वेदों में उनकी प्रशंसा का वर्णन कर उन्हें समाज में उत्कृष्टता का प्रतीक माना गया था। सम्पूर्ण रूप से, वेदों में किन्नरों की स्थिति उनके आध्यात्मिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक महत्व को प्रकट करती है। उन्हें समाज में सम्मानित और महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया था, जो उनके सौंदर्य, कला, और आध्यात्मिकता के प्रति मान्यता और सम्मान को प्रतिष्ठित करता है।

### 1.4 मुगल काल से पहले के कालखण्ड में किन्नरों का वर्णन

मुघल काल से पहले के अवधि में, भारतीय समाज में ट्रांसजेंडर (किन्नर) समुदाय की स्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण और सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण थी। इस समय के संस्कृतिक और धार्मिक परिपेक्ष्य में, ट्रांसजेंडर समुदाय को महान और दिव्य माना गया था, जिन्हें समाज में विशेष सम्मान और स्थान प्रदान किया गया था। वे धार्मिक और सामाजिक अवसरों में अपने आध्यात्मिक और कला के दायरे में योगदान देते थे, जैसे कि यज्ञों, दान पुण्य, नृत्य, और संगीत में। उनकी उपस्थिति को प्राकृतिक और दिव्य माना गया था, और उन्हें समाज में समानता और सम्मान के साथ देखा जाता था। ट्रांसजेंडर समुदाय की अस्तित्व को समाज के विभिन्न पहलुओं में गहराई से स्थापित किया गया था और उन्हें समाज के एक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार किया गया था।

### 1.5 अंग्रेजो के कल में किन्नरों की स्थिति

ब्रिटिश शासन के दौरान, भारत में ट्रांसजेंडर समुदाय की स्थिति में महत्वपूर्ण गिरावट आई। आपराधिक जनजाति अधिनियम, 1871 के तहत उन्हें "आपराधिक जनजाति" के रूप में वर्गीकृत किया गया, जिससे वे समाज में अपराधी और बाहरी के रूप में देखे जाने लगे। इस कानून ने उन्हें आर्थिक, सामाजिक, और कानूनी अधिकारों से वंचित कर दिया, जिससे उनकी पारंपरिक भूमिकाएं और पेशे बाधित हो गए। पुलिस उत्पीड़न और सामाजिक बहिष्कार आम हो गया, और उनकी सांस्कृतिक पहचान कमजोर पड़ गई। ब्रिटिश शासन ने भारतीय समाज में पश्चिमी नैतिकता लागू करने का प्रयास किया, जिससे ट्रांसजेंडर समुदाय की स्थिति और खराब हो गई। इस समयावधि में, ट्रांसजेंडर समुदाय को गंभीर भेदभाव, गरीबी, और असमानता का सामना करना पड़ा, जिसने उनकी सामाजिक स्थिति को अत्यंत चुनौतीपूर्ण बना दिया।

### 1.6 स्वतंत्रता प्राप्ति में किन्नरों का योगदान

भारत की स्वतंत्रता संग्राम में किन्नर समुदाय का योगदान अद्वितीय और महत्वपूर्ण रहा है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, किन्नर समुदाय ने न केवल प्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्रता सेनानियों का समर्थन किया, बल्कि परोक्ष रूप से भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके द्वारा दिए गए आर्थिक योगदान और नैतिक समर्थन ने स्वतंत्रता संग्राम को मजबूती प्रदान की। किन्नर समुदाय के कई सदस्य गुप्त रूप से स्वतंत्रता सेनानियों के संदेशवाहक के रूप में कार्य करते थे, जो अंग्रेजों की नजरों से बचकर महत्वपूर्ण सूचनाओं का आदान-प्रदान करते थे। इसके अलावा, किन्नरों ने विभिन्न आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया और ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह में हिस्सा लिया। उन्होंने अपनी पारंपरिक कला और नृत्य का उपयोग करते हुए जनसमूह को संगठित किया और स्वतंत्रता संग्राम के प्रति जागरूकता फैलाई। इस प्रकार, किन्नर समुदाय ने स्वतंत्रता संग्राम में अपने साहस, निष्ठा, और समर्पण से महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसे आज भी भारतीय इतिहास में सम्मान के साथ याद किया जाता है।

## I. साहित्य की समीक्षा

**क्रेग, रे., (2023)।** यह पेपर दिल्ली, भारत में ट्रांसजेंडर (ट्रांस) समुदाय के सामने आने वाली सामाजिक-आर्थिक बाधाओं और समुदाय को मिलने वाली स्वास्थ्य देखभाल के बीच संबंध बनाने का प्रयास करता है। यह मुख्य रूप से उन ट्रांसजेंडर लोगों पर चर्चा करता है जो किन्नर आबादी का हिस्सा नहीं हैं, किन्नर समुदाय के अनुभवों पर यथासंभव विचार करते हुए, उनके क्षेत्रों तक सीमित पहुंच प्रदान की जाती है। ट्रांस समुदायों के साथ काम कर चुके पांच ट्रांसजेंडर व्यक्तियों और दो सिजेंडर व्यक्तियों ने दिल्ली में ट्रांस लोगों के दैनिक जीवन और उनके स्वास्थ्य देखभाल अनुभवों को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों को समझने के लिए अर्ध-संरचित गुणात्मक साक्षात्कार में भाग लिया। स्वास्थ्य देखभाल के अनुभवों को प्रभावित करने वाले कारकों के रूप में सामाजिक धारणा, पारिवारिक दबाव, शिक्षा, आवास और रोजगार में भेदभाव, सामान्य उपचार जैसे सामान्य विषयों को खोजते हुए साक्षात्कारों को प्रतिलेखित और कोडित किया गया। पेपर मुख्य रूप से ट्रांस प्रतिभागियों के जीवित अनुभवों और विशेषज्ञता पर निर्भर करता है, जो विद्वान स्रोतों द्वारा पूरक है जो इन सामाजिक मुद्दों के प्रभाव को दोहराते हुए बताता है कि इनमें से प्रत्येक कारक ट्रांस लोगों के लिए स्वास्थ्य सेवा की गुणवत्ता और पहुंच को कैसे प्रभावित करता है। अंतिम खंड दिल्ली में स्वास्थ्य सेवा और उससे आगे के क्षेत्रों में अनुसंधान और ट्रांस समुदाय की स्थिति में सुधार के लिए भविष्य की दिशाएं प्रदान करता है।

**वर्मा, सुनील के., एट अल., (2023)** कलंकित सामाजिक स्थिति का सामना करने वाले भारतीय किन्नरों के जीवन जगत को समझने के लिए, वर्तमान अध्ययन ने एक नृवंशविज्ञान दृष्टिकोण अपनाया। अध्ययन में मुख्यधारा के समाज के बारे में भारतीय हिजड़ों के अनुभवों का पता लगाया गया। जिन मुद्दों का पता लगाया गया उनमें उनकी सामाजिक स्थिति के बारे में उनकी धारणा, उनके प्रति सामाजिक प्रतिक्रिया के बारे में उनकी धारणाएं और एक सार्थक जीवन बनाने के लिए इन चुनौतियों से निपटने के तरीके शामिल थे। अर्ध-संरचित साक्षात्कार और प्रतिभागी अवलोकन का उपयोग करके आठ हिजड़ों का एक सैद्धांतिक नमूना तैयार किया गया और

उसका अध्ययन किया गया। नृवंशविज्ञान सामग्री विश्लेषण और शोधकर्ता के प्रतिबिंब का उपयोग करके डेटा का विश्लेषण किया गया था। परिणामों से पता चलता है कि हिजड़े संकटपूर्ण जीवन का अनुभव करते हैं, जो सामाजिक रिश्तों (विशेष रूप से परिवार) में अस्वीकृति, कम उम्र में भेदभाव और बहिष्कार, धमकाने और यौनकर्मियों के रूप में उनकी लोकप्रिय धारणा से प्रेरित है। उनका संकट वित्तीय (गरीबी और रोजगार के अवसरों की कमी), सामाजिक और मनोवैज्ञानिक (किसी की लिंग पहचान पर सवाल उठाना) है, जिसके परिणामस्वरूप अलगाव, अकेलापन, त्याग दिए जाने की भावना, अन्याय होने और कथित जीवन असंतोष होता है। ये सभी कारक हिजड़ों के जीवन में निरर्थकता में योगदान करते हैं और वे अपने अस्तित्व पर सवाल उठाना शुरू कर देते हैं। सार्थक जीवन के लिए उनके प्रयास बच्चों को गोद लेने, माता-पिता की भूमिका निभाने और गुरु-चेला रिश्ते को पोषित करने के माध्यम से पारिवारिक रिश्ते विकसित करने के इर्द-गिर्द घूमते हैं। नतीजों से सकारात्मक अनुभव भी सामने आते हैं, जो काफी हद तक उनकी राजनीतिक भागीदारी और सामाजिक सेवा के कारण है। अध्ययन में हिजड़ों के लिए महत्वपूर्ण नीतिगत निहितार्थ हैं। हिजड़ों की अनूठी जीवन चुनौतियों के बारे में जागरूकता पैदा करने और सामाजिक न्याय और उनके शिक्षा और रोजगार के अधिकार को बढ़ावा देने में मदद करने की आवश्यकता है।

**राजुएनी, खुजिथ, एट अल., (2022)** भारत में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए लिंग पुनर्निर्धारण प्रक्रियाओं के लिए हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी (एचआरटी) महत्वपूर्ण है। अध्ययन महाराष्ट्र, भारत में स्त्रीकरण प्रक्रियाओं के लिए एचआरटी तक पहुंचने के लिए पुरुष से महिला ट्रांसजेंडरों की प्रथाओं का पता लगाता है। इस गुणात्मक खोजपूर्ण अध्ययन के लिए पहले प्रतिभागी को एक समुदाय-आधारित संगठन से भर्ती किया गया था। डेटा संतृप्ति तक पहुंचने तक स्नोबॉल नमूने का उपयोग करके आगे प्रतिभागियों को भर्ती किया गया था। प्रतिभागियों की लिखित/ऑडियो-विजुअल सहमति के बाद वीडियो प्लेटफॉर्म पर गहन साक्षात्कार (आईडीआई) आयोजित किए गए। रिकॉर्ड किए गए साक्षात्कारों को शब्दशः रूपांतरित किया गया। प्रत्येक साक्षात्कार के बाद, आगमनात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करके विषयगत सामग्री विश्लेषण के माध्यम से डेटा का विश्लेषण किया गया। प्रचलित प्रथाओं की पहचान प्रासंगिक वाक्यांशों, वाक्यों और प्रतिलेखों की शर्तों से की गई और उन्हें लेबल और कोडित किया गया। अध्ययन में एचआरटी के लिए परिवार से स्वीकृति और समर्थन की कमी की सूचना दी गई। कुछ प्रतिभागियों को छोड़ दिया गया या उन्होंने अपने घरों से भागने का फैसला किया और परिवार के समर्थन के बिना संक्रमण से गुजर रहे थे। प्रतिभागियों ने सामर्थ्य की कमी, प्रशिक्षित डॉक्टरों की कमी और स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं में लगातार कलंक और भेदभाव के कारण एचआरटी को ओवर-द-काउंटर तक पहुंचने और स्व-दवा का अभ्यास करने की सूचना दी। जो लोग स्व-चिकित्सा करते थे, वे शारीरिक उपलब्धियों के आधार पर अपने साथियों को दी जाने वाली समान दवा या स्व-समायोजित खुराक का पालन कर रहे थे। हिजड़ा रिश्तेदारी के प्रतिभागी एचआरटी सेवाओं का लाभ उठाने के लिए अपने नेताओं पर निर्भर थे। स्त्रीकरण प्रक्रियाओं के लिए मानक एचआरटी दिशानिर्देश विकसित करने और स्वास्थ्य कार्यक्रमों में एचआरटी सेवाओं को शामिल करने की आवश्यकता है। महाराष्ट्र में स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों को प्रशिक्षित करने और इन प्रक्रियाओं के लिए उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करने की आवश्यकता है।

**घोष, डॉयल, और प्रशांत कुमार रॉय (2022)** भारत में ट्रांसजेंडर आबादी अत्यधिक कलंकित है और परिवार के भीतर और बाहर बहुमुखी समस्याओं का सामना करती है जिसके शारीरिक, भावनात्मक और सामाजिक परिणाम हो सकते हैं। यह अध्याय भारत के सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से इस लैंगिक अल्पसंख्यक आबादी और उनकी पीड़ा को देखने का एक प्रयास है। पौराणिक कथाओं और इतिहास से पता चलता है कि लैंगिक गैर-अनुरूपता व्यवहार की सांस्कृतिक स्वीकृति थी जो भेदभाव प्रमुख होने के साथ गायब हो गई। यहां दक्षिण-पूर्व एशिया के सांस्कृतिक संदर्भ में, विशेष रूप से भारत में, मानसिक स्वास्थ्य संकटों और लिंग अल्पसंख्यक आबादी के 'बाहर आने' के लिए एक योगदानकर्ता या सुरक्षात्मक कारक के रूप में माता-पिता की भूमिका और माता-पिता की धारणा पर चर्चा की गई है। लेखक माता-पिता और बच्चे दोनों दृष्टिकोण से उन माता-पिता के भारतीय मानस का पता लगाते हैं जिनके ट्रांसजेंडर बच्चे हैं। हमने लैंगिक असमानता वाले रवैये या व्यवहार वाले माता-पिता और बच्चों दोनों की मदद के लिए बेहतर पालन-पोषण प्रथाओं के संबंध में एक मॉडल भी प्रस्तावित किया है।

**नारायण, सोनम., (2022)।** सबसे विविध, बहुरंगी, श्रेणीबद्ध, कठोर और समान रूप से वैज्ञानिक मानसिकता वाली दूरदर्शी सभ्यताओं में से एक भारतीय समाज है। कामसूत्र जैसे साहित्य में, प्राचीन कलाकृतियाँ और भारतीय इतिहास में एलजीबीटी समुदाय के योगदान का स्पष्ट रूप से लिखित विवरण पाया जा सकता है। वर्तमान दुनिया के विपरीत, एलजीबीटी लोगों पर प्राचीन भारतीय सामाजिक-कानूनी विचार लचीले और तर्कसंगत थे। लंबे समय से, शिक्षाविदों ने कहा है कि पूर्व-औपनिवेशिक भारतीय समाज में समान-लिंग साझेदारी अवैध नहीं थी और न ही इसे अनैतिक या दुष्ट माना जाता था। दुनिया में सबसे बड़े और तीसरे सबसे अधिक प्रचलित धर्म हिंदू धर्म में समलैंगिकता को ऐतिहासिक रूप से प्राकृतिक और आनंददायक माना गया है। महाभारत में कई पात्र अपना लिंग बदलते हैं, जिनमें शिखंडी भी शामिल है, जो जन्म से महिला है लेकिन बाद में एक महिला से शादी करता है और खुद को पुरुष के रूप में पहचानता है। कई प्राचीन मुगल साम्राज्यों में ज़िना (अवैध संभोग) के लिए फतवा-ए-आलमगिरी घोषित किया गया था, जिसमें मुसलमानों के लिए पत्थर मारकर मौत, 100 कोड़े या 50 कोड़े आदि जैसी सजाओं का प्रावधान था। हालांकि, अभिजात वर्ग के लिए, पर। कम से कम, व्यवहार में इस आवश्यकता की व्यापक रूप से उपेक्षा की गई। 16वीं और 17वीं शताब्दी में, ट्रांसजेंडर लोग मुगल सम्राटों के दरबार में प्रभावशाली पदों पर थे। मुग़ल दरबारी जीवन में समलैंगिकता-कामुकता काफी प्रचलित

थी। मुगल बादशाह बाबर ने अपनी आत्मकथा में एक लड़के पर अपने क्रश के बारे में बताया है। इसके विपरीत, औसत मुगल द्वारा समलैंगिक व्यवहार को नापसंद किया जाता था। आईपीसी की धारा 377 के तहत, अंग्रेजों ने समलैंगिकों और विषमलैंगिकों दोनों के लिए मौखिक और गुदा मैथुन को अवैध बना दिया। यह अध्याय इस बात की जांच करेगा कि कैसे समलैंगिकता, जिसे अक्सर प्राचीन लेखों में संबोधित किया जाता है, पूरे मुगल राजवंश (1526-1857) में प्रतिबंधित हो गई और अंततः अंग्रेजों द्वारा इसे "अप्राकृतिक पाप" के रूप में संहिताबद्ध किया गया। अध्याय एस की उत्पत्ति का विश्लेषण करता है। प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक भारत में प्रचलित सभी मुख्य धर्मों में प्राचीन भारतीय लेखन में एलजीबीटी लोगों के पूरी तरह से प्रलेखित इतिहास पर गौर करने के बाद भारत के औपनिवेशिक इतिहास में 377। यह बाद के भाग में समलैंगिक व्यवहार को अपराध की श्रेणी से बाहर करने और स्वतंत्र भारत में ट्रांसजेंडर अधिकारों की स्वीकृति के लिए लड़ाई को समझाने की कोशिश करता है।

**चटर्जी, श्रद्धा (2018)** भारत में ट्रांसजेंडर व्यक्तिपरकता के क्षेत्र के संबंध में एक बड़ा खेल चल रहा है जो लिंग या कामुकता से परे है, और विवादित संस्कृतियों और ऐतिहासिक मिटाने के क्षेत्र में प्रवेश करता है। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि भारत में एक समकालीन ट्रांसजेंडर विषय एक तरफ खुद को पूर्व-औपनिवेशिक और औपनिवेशिक इतिहास की लुप्त होती आवाज और दूसरी तरफ वैश्वीकरण के मजबूत खिंचाव के बीच फंसा हुआ पाता है, जिससे शायद एक उलझे हुए संबंध के रूप में कल्पना की जा सकती है। (ट्रांसजेंडर) ऐतिहासिकता और अस्थायीता वाला विषय। लिंग और कामुकता की पूर्व-आधुनिक अवधारणाओं के बीच एक जटिल अंतर है जो विषय में सांस्कृतिक स्मृति के रूप में रहता है, अपने स्वयं के पुरातन वजन रखता है, और समकालीन में ट्रांसजेंडर के तेजी से बढ़ते संकेतक के बीच है। इस आलेख का कार्य यह पता लगाना है कि इस अंतराल में क्या पाया जा सकता है, जो एक ऐसे सुराग का वादा करता है जो संस्कृति, इतिहास और स्मृति की बदलती रेत का लक्षण है जैसा कि वे भारत में खेलते हैं, और वे किस प्रकार एक सिद्धांत की ओर इशारा कर सकते हैं कामुकता जो पश्चिम में अपने इतिहास से दूर है।

**मंडल, विकास चंद्र, और ब्रिंटिका दास (2017)** यह लेख भारत के हिजड़ा समुदाय के धार्मिक प्रतिनिधित्व और सामाजिक वास्तविकता के बीच एक तुलनात्मक अध्ययन है। यह लेख उनके धार्मिक प्रतिनिधित्व को उजागर करने के लिए भारत के विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों और त्योहारों के अलावा रामायण, महाभारत और अन्य प्राचीन ग्रंथों जैसे धार्मिक ग्रंथों का संदर्भ लेता है। दूसरी ओर, बांग्ला फिल्म, नगर कीर्तन (2017) को पारंपरिक हिंदू समाज में उनके वर्तमान और व्यावहारिक सामाजिक जीवन पर ध्यान केंद्रित करने के लिए लिया गया है। इस तरह, लेख यह अध्ययन करने का प्रयास करता है कि कैसे वे हर संभव तरीके से हाशिए पर हैं जो उनके अस्तित्व को खतरे में डालता है। यह पेपर कुल मिलाकर हिंदू पितृसत्ता पर आलोचनात्मक दृष्टि डालने का प्रयास करता है जो भारत में हिजड़ा या ट्रांसजेंडर जैसे 'अन्य' समुदायों को पीड़ित करता है।

**श्रीवास्तव, सृष्टि, और सतेंद्र कुमार मिश्रा।** यह शोध पत्र 'वोल्गा से गंगा' का एक आलोचनात्मक अवलोकन है जो हिंदी यात्रा साहित्य के जनक कहे जाने वाले राहुल सांकृत्यायन के प्रसिद्ध यात्रा साहित्य में से एक है। दो प्रमुख नदियों वोल्गा और गंगा को लेने का निर्णय दोनों के बीच संबंध को दर्शाता है। एक संबंध यह है कि दोनों नदियों को मातृ नदी के रूप में स्वीकार और पहचाना जाता है। एक तरफ जहां रूसी संस्कृति में वोल्गा को 'मातुष्का' कहा जाता है जिसका अर्थ है मां वोल्गा, वहीं दूसरी तरफ भारतीय संस्कृति में गंगा को 'मैया' यानी मां गंगा के रूप में पूजा जाता है। 'वोल्गा से गंगा' पुस्तक क्लासिक ऐतिहासिक कथाओं में से एक है जो मूल रूप से ऐतिहासिक कैनवास की आलोचनात्मक गहराई के साथ आश्चर्यजनक विवरण के साथ हिंदी में लिखी गई थी। सांकृत्यायन की रचनाओं ने पाठकों को यात्रा साहित्य के प्रति नई अंतर्दृष्टि प्रदान की है।

**कौर, पुष्पिंदर.** उत्तर-आधुनिक समय में उस चीज़ से बदलाव देखा गया है जिसे अब तक स्थिर माना जाता रहा है और कुछ भी स्थिर या निश्चित नहीं है। शासन, पहचान, कामुकता, उदारीकरण, लैंगिक भूमिका जैसे मुद्दों को नए आयाम मिले हैं। 'तीसरा लिंग' जो लंबे समय से हाशिए पर है या समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में अपनी वास्तविक पहचान और प्रतिनिधित्व से वंचित है, उस पर गंभीर ध्यान देने की आवश्यकता है। 21वीं सदी के आलोक में, यह पेपर भारत में ट्रांसजेंडर समुदाय की वर्तमान स्थिति से संबंधित है और सुप्रीम कोर्ट के 2014 के ऐतिहासिक फैसले पर प्रकाश डालता है, जिसने कानूनी तौर पर ट्रांसजेंडरों को 'थर्ड जेंडर' के रूप में मान्यता दी थी। ट्रांसजेंडर एक सामान्य शब्द है जो विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों, व्यवहारों और समूहों पर लागू होता है जो मानक लिंग भूमिकाओं से भिन्न होते हैं। ट्रांसजेंडर शब्द स्वयं सीमाओं को पार करने का प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व है और इसे दो अलग-अलग भाषाओं से लिया गया है; लैटिन शब्द 'ट्रांस' और अंग्रेजी शब्द 'जेंडर'। सुशासन का अर्थ लिंग, जाति और धर्म की परवाह किए बिना सभी के लिए न्याय, सशक्तिकरण, रोजगार और सेवाओं की कुशल डिलीवरी सुनिश्चित करना है। सुशासन और नागरिक एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं क्योंकि सभ्य समाज में एक के बिना दूसरे का अस्तित्व संभव नहीं है। विकास एक बहुआयामी घटना है, जिसे तब तक हासिल नहीं किया जा सकता जब तक इसमें समुदाय स्वयं शामिल न हो। जबकि सुप्रीम कोर्ट के फैसले ने ट्रांसजेंडरों को उनकी पहचान के मामले में मदद की है, भारतीय अधिकारियों को अब ट्रांसजेंडर समुदाय को मुख्यधारा में लाने, उनके खिलाफ भेदभाव को समाप्त करने और उनकी सामाजिक सुरक्षा आवश्यकताओं को संबोधित करने के उद्देश्य से अदालत के निर्देशों को लागू करने की आवश्यकता है। पेपर में चिंता के कई क्षेत्रों को सूचीबद्ध किया गया है जिन्हें ऊर्जावान ढंग से संबोधित करने की आवश्यकता है और सरकार और समाज के बीच प्रयासों के तालमेल का आह्वान किया गया है। यह पेपर कुछ तीसरे लिंगों

के मामले का अध्ययन भी प्रस्तुत करता है जिन्होंने सफलता हासिल करने के लिए संघर्ष किया और इस तरह अपने समुदाय के लिए प्रेरणा बन गए।

## II. मुगल काल में दरबार और राजनीतिक पदों पर किन्नरों की नियुक्ति।

मुगल काल में किन्नरों (हिजड़ों) की नियुक्ति दरबार और राजनीतिक पदों पर एक महत्वपूर्ण और रोचक पहलू है। किन्नरों की भूमिका मुगल साम्राज्य के प्रशासन और दरबार में महत्वपूर्ण थी। यहाँ कुछ मुख्य बिंदु हैं जो उनकी नियुक्ति और कार्यों को स्पष्ट करते हैं:

### महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्ति

- किन्नरों को मुगल दरबार में उच्च पदों पर नियुक्त किया जाता था। उदाहरण के लिए, किन्नर दरबार के अंदरूनी हिस्सों, खासकर हरम (महिला महल) की सुरक्षा और प्रबंधन में नियुक्त किए जाते थे।
- कई किन्नर दरबार के महत्वपूर्ण और गोपनीय पदों पर नियुक्त किए गए थे। उन्हें दरबारी गोपनीयता और शाही परिवार के आंतरिक मामलों की जानकारी होती थी, जो उन्हें महत्वपूर्ण बनाता था।

### विश्वसनीयता और निष्ठा

- किन्नरों को मुगलों द्वारा अत्यधिक विश्वसनीय माना जाता था। उनकी निष्ठा और विश्वास के कारण उन्हें शाही हरम और अन्य संवेदनशील क्षेत्रों की देखभाल के लिए चुना जाता था।
- किन्नर शासकों के प्रति वफादार होते थे और कई बार उन्हें शाही बच्चों के शिक्षकों और संरक्षकों के रूप में भी नियुक्त किया जाता था।

### राजनीतिक भूमिका

- किन्नरों को न केवल घरेलू मामलों में बल्कि राजनीतिक मामलों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का अवसर मिला। वे दरबार के महत्वपूर्ण अधिकारियों और मंत्रियों के रूप में भी कार्य करते थे।
- किन्नरों को राजदूत के रूप में भी भेजा जाता था क्योंकि वे शाही संदेशवाहक के रूप में कार्य करने में सक्षम होते थे और उन्हें गोपनीय सूचनाओं की देखरेख करने का अनुभव होता था।

### प्रभावशाली व्यक्ति

- किन्नरों के पास समय-समय पर इतनी शक्ति और प्रभाव होता था कि वे शाही निर्णयों को प्रभावित कर सकते थे। उनके पास बड़ी संपत्ति और संपत्ति भी होती थी, जो उनकी शक्ति को बढ़ाती थी।

### सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव

- किन्नरों का मुगल काल में सामाजिक और सांस्कृतिक योगदान भी था। वे कई बार सांस्कृतिक गतिविधियों और शाही समारोहों में भाग लेते थे।

मुगल काल में किन्नरों की भूमिका उनकी विशिष्टता और समाज में उनके सम्मान का प्रमाण है। उनकी नियुक्ति और कार्यक्षेत्र उनकी निष्ठा, योग्यता और महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है जो उन्होंने मुगल साम्राज्य में निभाई।

## III. सुप्रीम कोर्ट द्वारा किन्नर समुदाय को तीसरे लिंग के रूप में मान्यता

2014 में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने एक ऐतिहासिक निर्णय में किन्नर समुदाय (हिजड़ों) को तीसरे लिंग के रूप में मान्यता दी। यह निर्णय सामाजिक न्याय और समानता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। यहाँ इस निर्णय के मुख्य बिंदु हैं:

### निर्णय का आधार

- 15 अप्रैल 2014 को, न्यायमूर्ति के.एस. राधाकृष्णन और न्यायमूर्ति एके. सीकरी की पीठ ने यह फैसला सुनाया। अदालत ने कहा कि संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 19, और 21 के तहत किन्नरों को समान अधिकार दिए जाने चाहिए।
- अदालत ने यह माना कि किन्नर समुदाय के लोगों के साथ लंबे समय से भेदभाव हो रहा है और उन्हें समाज में बराबरी का दर्जा मिलना चाहिए।

### तीसरे लिंग की मान्यता

- इस फैसले में सर्वोच्च न्यायालय ने किन्नरों को 'तीसरे लिंग' के रूप में पहचान दी, जिससे उनके अधिकारों और पहचान को कानूनी मान्यता मिली।
- इसके परिणामस्वरूप, किन्नर समुदाय के लोग अब सरकारी दस्तावेजों जैसे पासपोर्ट, पहचान पत्र, और शैक्षिक प्रमाणपत्रों में अपने लिंग के रूप में 'तीसरा लिंग' दर्ज करा सकते हैं।

**समान अधिकार और अवसर**

- अदालत ने निर्देश दिया कि किन्नरों को शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य सेवाओं में समान अधिकार और अवसर प्रदान किए जाएं।
- सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों में भी उन्हें शामिल करने के निर्देश दिए गए ताकि वे सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त हो सकें।

**आरक्षण का प्रावधान**

- सर्वोच्च न्यायालय ने राज्य सरकारों को निर्देश दिया कि वे किन्नरों के लिए शैक्षिक संस्थानों और सरकारी नौकरियों में आरक्षण की व्यवस्था करें, जैसा कि अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए किया जाता है।

**अधिकारों की रक्षा**

- अदालत ने किन्नरों के मानवाधिकारों की रक्षा के लिए कठोर कदम उठाने की आवश्यकता पर जोर दिया और उनके साथ किसी भी प्रकार के भेदभाव या हिंसा को रोकने के लिए कानून लागू करने की सिफारिश की।

इस फैसले का व्यापक प्रभाव पड़ा और यह किन्नर समुदाय के लिए सम्मान और अधिकार की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ। इससे किन्नर समुदाय को समाज में अपनी पहचान और स्थान के लिए संघर्ष करने में मदद मिली और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए एक कानूनी आधार प्रदान किया गया।

## IV. विभिन्न सरकारी योजनाएं और कार्यक्रम किन्नर समुदाय के लिए

भारत सरकार और विभिन्न राज्य सरकारों ने किन्नर समुदाय के सशक्तिकरण और उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए कई योजनाएं और कार्यक्रम शुरू किए हैं। इनमें से प्रमुख हैं 'गरिमा गृह' योजना, जो ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को सुरक्षित और सम्मानजनक जीवनयापन के लिए आश्रय प्रदान करती है। इसके अलावा, 'राष्ट्रीय ट्रांसजेंडर कल्याण बोर्ड' की स्थापना की गई है ताकि ट्रांसजेंडर समुदाय के विकास के लिए नीतियां बनाई जा सकें और उनकी समस्याओं का समाधान हो सके। राज्य स्तर पर, तमिलनाडु सरकार ने किन्नर समुदाय के लिए विशेष पेंशन योजनाएं, स्वास्थ्य बीमा, और शिक्षा में आरक्षण की सुविधा प्रदान की है। महाराष्ट्र, ओडिशा, और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में भी ट्रांसजेंडर समुदाय के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा, और रोजगार के क्षेत्र में विशेष योजनाएं चलाई जा रही हैं। इन सभी प्रयासों का उद्देश्य किन्नर समुदाय को समाज की मुख्यधारा में शामिल करना और उन्हें समान अवसर प्रदान करना है।

## V. समाज में किन्नर समुदाय को आज भी सामाजिक भेदभाव का सामना

हालांकि किन्नर समुदाय को कानूनी मान्यता और कुछ सरकारी सहायता मिल चुकी है, फिर भी उन्हें आज भी व्यापक सामाजिक भेदभाव का सामना करना पड़ता है। समाज में उनकी स्थिति को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

**सामाजिक बहिष्कार:** किन्नर समुदाय के सदस्यों को अक्सर परिवार और समाज द्वारा बहिष्कृत कर दिया जाता है। उन्हें बचपन से ही उनके परिवार से दूर कर दिया जाता है, जिससे उनकी शिक्षा और सामाजिक विकास बाधित होता है।

**शिक्षा और रोजगार में भेदभाव:** किन्नरों को स्कूलों और कॉलेजों में प्रवेश के दौरान भेदभाव का सामना करना पड़ता है। नौकरी पाने में भी उन्हें कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर रहती है।

**स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच:** किन्नर समुदाय के लोगों को स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अस्पतालों और क्लीनिकों में अक्सर उन्हें तिरस्कार और अपमान का सामना करना पड़ता है, जिससे वे आवश्यक चिकित्सा सेवाओं से वंचित रह जाते हैं।

**आवास की समस्याएं:** किन्नरों को सुरक्षित और सम्मानजनक आवास ढूंढने में कठिनाई होती है। उन्हें अक्सर किराए के घर देने से इनकार कर दिया जाता है, जिससे वे असुरक्षित और अनियमित आवास स्थितियों में रहने को मजबूर होते हैं।

**मानसिक और शारीरिक हिंसा:** किन्नरों को मानसिक और शारीरिक हिंसा का शिकार होना पड़ता है। समाज में उन्हें तिरस्कार, अपमान, और शोषण का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

**कानूनी अधिकारों की कमी:** हालांकि कानूनी सुधार हो रहे हैं, फिर भी किन्नरों को न्यायिक प्रणाली में भेदभाव और उनकी समस्याओं का सही समाधान नहीं मिलता। उनके कानूनी अधिकारों की रक्षा के लिए और अधिक जागरूकता और संवेदनशीलता की आवश्यकता है।

इन सभी चुनौतियों के बावजूद, किन्नर समुदाय के लोग अपने अधिकारों और सम्मान के लिए लगातार संघर्ष कर रहे हैं। सामाजिक जागरूकता और संवेदनशीलता बढ़ाने के लिए सरकार, गैर-सरकारी संगठनों, और समाज के प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका महत्वपूर्ण है, ताकि किन्नर समुदाय को समान अवसर और सम्मान मिल सके।

## VI. किन्नर समुदाय का भारतीय संस्कृति और परंपराओं में महत्वपूर्ण स्थान।

किन्नर समुदाय भारतीय संस्कृति और परंपराओं में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनका योगदान सामूहिक एवं वैयक्तिक स्तर पर समाज के सामर्थ्य और समृद्धि में साक्षात्कार किया जाता है। उनकी संस्कृति और परंपराएं विविधता और रंगमंचता को बढ़ावा देती हैं, और उनकी कला, संगीत, नृत्य, और लेखन भारतीय सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। उनका विवाह संस्कृति और सामाजिक परंपराएं भी भारतीय समाज में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, जो समाज में सामरिक और सांस्कृतिक एकता को बनाए रखते हैं। उनकी सामाजिक सेवाएं और कार्यक्रम भी अल्पसंख्यक समुदायों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, और आर्थिक सहायता में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं, जिससे समाज में सामाजिक समता और न्याय का विकास होता है। इसके अलावा, किन्नर समुदाय का सांस्कृतिक संरक्षण भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है, जो भारतीय सांस्कृतिक विरासत की समृद्धता और विविधता को सुनिश्चित करता है। इस प्रकार, किन्नर समुदाय भारतीय समाज के विवेक को बढ़ावा देता है और सामाजिक समृद्धि और विविधता में महत्वपूर्ण योगदान करता है।

## संदर्भ:


1. **क्रेग, रे।** "दिल्ली में ट्रांसजेंडर और किन्नर समुदायों की स्थिति: सामाजिक आर्थिक कारकों को स्वास्थ्य से जोड़ने वाले केस अध्ययन।" (2023) ।
2. **कौर, पुष्पिंदर.** "शासन और कमजोर वर्गों का सशक्तिकरण: भारत में ट्रांसजेंडर समुदाय पर एक केस स्टडी।" समसामयिक सामाजिक विज्ञान: 1.
3. **राजुएनी, खुजिथ, और अन्य।** "भारत के महाराष्ट्र में पुरुष से महिला ट्रांसजेंडरों में हार्मोन थेरेपी तक पहुंच के लिए अभ्यास।" क्लिनिकल महामारी विज्ञान और वैश्विक स्वास्थ्य 15 (2022): 101071।
4. **चटर्जी, श्रद्धा.** "ट्रांसजेंडर बदलाव: भारत में लिंग और कामुकता के त्यागपत्र पर नोट्स।" ट्रांसजेंडर अध्ययन त्रैमासिक 5.3 (2018): 311-320।
5. **घोष, डॉयल, और प्रशांत कुमार रॉय।** "पालन-पोषण, मानसिक स्वास्थ्य और ट्रांसजेंडर युवा: भारत में प्रथाएं और परिप्रेक्ष्य।" सभी संस्कृतियों में पालन-पोषण: गैर-पश्चिमी संस्कृतियों में बच्चों का पालन-पोषण, मातृत्व और पितृत्व। चाम: स्प्रिंगर इंटरनेशनल पब्लिशिंग, 2022. 385-400।
6. **शर्मा, अंजलि, और मेघा अग्रवाल।** "ट्रांसजेंडर की शिक्षा: समाज को बदलने की दिशा में कदम।" सामाजिक-आर्थिक वंचित समूहों की शिक्षा। रूटलेज इंडिया, 2023. 29-44.
7. **मंडल, विकास चंद्र, और ब्रिंटिका दास।** "नगरकीर्तन (2017) का पुनरावलोकन और भारतीय संदर्भ में हिजड़ा (ट्रांसजेंडर/थर्ड जेंडर) समुदाय को संबोधित करना।"
8. **वर्मा, सुनील के., एट अल।** "विकल्पों के साथ रहना: भारतीय हिजड़ों में अनुमानित संकट, अर्थहीनता और सार्थक जीवन के प्रयास।" संस्कृति एवं मनोविज्ञान 29.4 (2023): 840-863।
9. **श्रीवास्तव, सृष्टि, और सतेंद्र कुमार मिश्रा।** "मातुष्का' और 'मैया' के समामेलन की ऐतिहासिकता: राहुल सांकृत्यायन की 'वोल्गा टू गंगा' पर आधारित।"
10. **नारायण, सोनम.** "भारत में एलजीबीटी का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक-कानूनी विश्लेषण।" (2022) ।